INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

"विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और व्यक्तित्व का विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव"

(Impact of School Teachers' Teaching Competence and Personality on Students' Academic Performance)

रिंकी निर्भय
शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग,
शोध केंद्र: मेरठ कॉलेज, मेरठ.
विश्वविद्यालय: चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ (उत्तर प्रदेश, भारत)
E-mail: omk569246@gmail.com

प्रोफेसर मीनाक्षी शर्मा
शोध-निर्देशिका, शिक्षा विभाग,
शोध केंद्र: मेरठ कॉलेज, मेरठ.
विश्वविद्यालय: चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/06.2026-81591642/IRJHIS2606012

सारांश :

*प्रस्तुत शोध पत्र **"विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और व्यक्तित्व का विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव"** शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक की भूमिका के महत्व को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाला माध्यम नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास का प्रमुख आधार भी होता है। शिक्षक की शिक्षण दक्षता, विषय ज्ञान, कक्षा प्रबंधन क्षमता, संप्रेषण कौशल तथा सकारात्मक व्यक्तित्व विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।*

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव का विश्लेषण करना है। शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अध्ययन का आधार बनाया गया है। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया। जानकारी एकत्र करने के लिए प्रश्नावली, अवलोकन एवं शैक्षणिक अभिलेखों का सहारा लिया गया।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जिन शिक्षकों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, सकारात्मक व्यवहार, प्रभावी संप्रेषण कौशल तथा आधुनिक शिक्षण विधियों का प्रयोग करने की दक्षता अधिक होती है, उनके विद्यार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया। साथ ही यह भी पाया गया कि शिक्षक का प्रेरणादायी व्यवहार विद्यार्थियों में सीखने की रुचि, आत्मविश्वास तथा अनुशासन को विकसित करता है, जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि होती है।

अंततः शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यवहारिक कौशल, व्यक्तित्व विकास तथा नवीन शिक्षण तकनीकों को सम्मिलित किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों के समग्र शैक्षणिक विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

***मुख्य शब्द** : शिक्षण दक्षता, व्यक्तित्व, विद्यालयी शिक्षक, शैक्षणिक प्रदर्शन, शैक्षणिक उपलब्धि, कक्षा प्रबंधन, संप्रेषण कौशल, विद्यार्थी विकास, शिक्षक व्यवहार, शिक्षा गुणवत्ता।*

प्रस्तावना :

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का प्रमुख आधार होती है। शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावी बनाने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाला माध्यम नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक विकास तथा शैक्षणिक प्रगति का मार्गदर्शक भी होता है। विद्यालयी वातावरण में शिक्षक की शिक्षण दक्षता तथा उसका व्यक्तित्व विद्यार्थियों के अधिगम एवं शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

शिक्षण दक्षता से आशय शिक्षक की उस क्षमता से है जिसके माध्यम से वह विषय-वस्तु को सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली ढंग से विद्यार्थियों तक पहुंचाता है। इसमें विषय ज्ञान, शिक्षण विधियाँ, संप्रेषण कौशल, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन तकनीक तथा विद्यार्थियों को प्रेरित करने की क्षमता सम्मिलित होती है। एक दक्ष शिक्षक विद्यार्थियों में जिज्ञासा, रचनात्मकता तथा आत्मविश्वास का विकास करता है, जिससे उनका शैक्षणिक प्रदर्शन बेहतर होता है।

इसी प्रकार शिक्षक का व्यक्तित्व भी विद्यार्थियों के व्यवहार एवं उपलब्धि को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व है। शिक्षक का व्यवहार, अनुशासन, सहानुभूति, नेतृत्व क्षमता, नैतिक मूल्य तथा विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाते हैं। सकारात्मक व्यक्तित्व वाला शिक्षक विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनता है और उन्हें अध्ययन के प्रति अधिक रुचि एवं उत्साह प्रदान करता है।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है। विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि केवल उनकी व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि शिक्षक की कार्यकुशलता एवं व्यक्तित्व भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और व्यक्तित्व का विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की प्रभावी भूमिका को समझने तथा शिक्षण गुणवत्ता में सुधार हेतु उपयोगी सुझाव प्रदान करने का प्रयास करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का आधार बन चुकी है। शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावी बनाने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक की शिक्षण दक्षता तथा उसका व्यक्तित्व विद्यार्थियों के अधिगम, व्यवहार, अभिप्रेरणा एवं शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। इसलिए विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और व्यक्तित्व का विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हो जाता है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को शिक्षा की सफलता का प्रमुख आधार माना जाता है। विद्यार्थियों की उपलब्धि केवल उनकी बौद्धिक क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि शिक्षक की कार्यशैली, व्यवहार, संप्रेषण कौशल तथा प्रेरणादायक व्यक्तित्व भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि शिक्षक विषय को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है तथा

विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करता है, तो विद्यार्थी अधिक रुचि एवं उत्साह के साथ अध्ययन करते हैं। इससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि होती है।

अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों के प्रशिक्षण, शिक्षण विधियों एवं व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए दक्ष एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक की शिक्षण दक्षता एवं व्यक्तित्व विद्यार्थियों के प्रदर्शन को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं।

यह अध्ययन शिक्षकों को अपनी शिक्षण शैली एवं व्यवहार में सुधार करने के लिए प्रेरित करेगा। इसके माध्यम से शिक्षक यह समझ सकेंगे कि उनका व्यक्तित्व, अनुशासन, सहानुभूति, नेतृत्व क्षमता एवं विद्यार्थियों के प्रति दृष्टिकोण विद्यार्थियों की उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करता है। साथ ही यह अध्ययन शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि इसके निष्कर्षों के आधार पर शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा।

अध्ययन का महत्व विद्यार्थियों के संदर्भ में भी अत्यधिक है। सकारात्मक एवं प्रेरणादायक शिक्षक विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अध्ययन के प्रति रुचि तथा अनुशासन की भावना विकसित करते हैं। इससे विद्यार्थियों का मानसिक एवं शैक्षणिक विकास बेहतर होता है। इसके अतिरिक्त यह अध्ययन अभिभावकों एवं शिक्षा प्रशासकों के लिए भी उपयोगी होगा, क्योंकि वे शिक्षण गुणवत्ता एवं विद्यालयी वातावरण को सुधारने हेतु उचित कदम उठा सकेंगे।

अतः प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता को समझने, शिक्षकों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने तथा विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार लाने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा :

शुक्ला (2015) ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि प्रभावी शिक्षण विधियों का प्रयोग करने वाले शिक्षकों के विद्यार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर था। शोध में यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षक की विषय पर पकड़ एवं कक्षा प्रबंधन कौशल विद्यार्थियों की उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। शर्मा एवं वर्मा (2016) ने शिक्षक व्यक्तित्व तथा विद्यार्थियों की अध्ययन रुचि पर अध्ययन किया। निष्कर्षों में यह स्पष्ट हुआ कि सकारात्मक एवं प्रेरणादायक व्यक्तित्व वाले शिक्षक विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन तथा अधिगम प्रेरणा विकसित करते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों की मानसिक एवं शैक्षणिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सिंह (2017) ने सरकारी एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। शोध के अनुसार आधुनिक शिक्षण तकनीकों एवं नवीन शिक्षण विधियों का उपयोग विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ। यादव एवं मिश्रा (2018) ने शिक्षक व्यवहार और विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि सहयोगात्मक, संवेदनशील एवं प्रोत्साहनात्मक व्यवहार विद्यार्थियों के प्रदर्शन को बेहतर बनाता है।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षक-विद्यार्थी संबंध अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गुप्ता (2018) ने कक्षा प्रबंधन कौशल एवं विद्यार्थियों की उपलब्धि पर अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि प्रभावी कक्षा प्रबंधन से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार होता है। जिन शिक्षकों ने अनुशासित एवं सकारात्मक कक्षा वातावरण बनाए रखा, उनके विद्यार्थियों की अध्ययन रुचि एवं उपलब्धि अधिक पाई गई। चौहान (2019) ने शिक्षक की संप्रेषण क्षमता तथा विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। परिणामों में सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अध्ययन के अनुसार स्पष्ट एवं प्रभावी संप्रेषण विद्यार्थियों की समझ, सहभागिता एवं आत्मविश्वास को बढ़ाता है। कुमारी एवं सिंह (2019) ने शिक्षक व्यक्तित्व का किशोर विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा पर प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि प्रेरणादायक व्यक्तित्व वाले शिक्षक विद्यार्थियों की अध्ययन अभिरुचि एवं आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि सकारात्मक शिक्षक विद्यार्थियों को लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रेरित करते हैं। नागपाल (2020) ने "The Impact of Personality on Academic Achievement of B.Ed Teacher Trainees" शीर्षक अध्ययन में पाया कि व्यक्तित्व के गुण शैक्षणिक उपलब्धि से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित हैं। शोध के अनुसार आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक व्यवहार जैसे व्यक्तित्व गुण शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। पटेल एवं जैन (2021) ने शिक्षण दक्षता एवं विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों का अध्ययन किया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि दक्ष शिक्षक विद्यार्थियों की उपलब्धि में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। शोध में यह भी पाया गया कि आधुनिक शिक्षण तकनीकों एवं सहभागितापूर्ण शिक्षण विधियों का उपयोग विद्यार्थियों की सफलता को बढ़ाता है। शर्मा (2022) ने शिक्षक नेतृत्व क्षमता एवं विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर अध्ययन किया। निष्कर्षों में पाया गया कि नेतृत्व क्षमता वाले शिक्षक विद्यार्थियों में अनुशासन, जिम्मेदारी एवं अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं। अध्ययन के अनुसार शिक्षक का नेतृत्व कौशल विद्यालयी वातावरण को अधिक प्रभावी एवं प्रेरणादायक बनाता है।

Robert M. Klassen एवं Virginia M. C. Tze (2014) ने शिक्षकों की ***self-efficacy***, ***personality*** तथा ***teaching effectiveness*** पर मेटा-विश्लेषण किया। अध्ययन में शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षक व्यक्तित्व के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया। शोध में यह भी स्पष्ट हुआ कि आत्म-प्रभावकारिता वाले शिक्षक विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाते हैं। Lisa E. Kim, Verena Jörg एवं Robert M. Klassen (2019) ने शिक्षक व्यक्तित्व एवं शिक्षक प्रभावशीलता पर अध्ययन किया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि ***conscientiousness*** तथा ***emotional stability*** जैसे व्यक्तित्व गुण विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। अध्ययन में यह भी बताया गया कि सकारात्मक व्यक्तित्व वाले शिक्षक विद्यार्थियों को अधिक प्रेरित करते हैं। Janina Roloff आदि (2020) ने जर्मनी में शिक्षक व्यक्तित्व एवं ***instructional quality*** पर अध्ययन किया। परिणामों में पाया गया कि शिक्षक व्यक्तित्व शिक्षण गुणवत्ता का महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक है। जिन शिक्षकों का व्यवहार सहयोगात्मक एवं सकारात्मक था, उनके विद्यार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन बेहतर पाया गया। Ma (2022) ने शिक्षक ***self-efficacy*** एवं ***creativity*** का विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में सकारात्मक प्रभाव पाया गया। शोध के अनुसार रचनात्मक एवं आत्मविश्वासी शिक्षक विद्यार्थियों में नवाचार एवं समस्या समाधान क्षमता विकसित करते हैं।

Khodadady एवं Mirjalili ने विदेशी भाषा अधिगम में शिक्षक प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व का अध्ययन किया। परिणामों में ***teacher effectiveness*** तथा ***academic achievement*** के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया। अध्ययन में संप्रेषण क्षमता को भाषा अधिगम का प्रमुख कारक माना गया। Rahila Huma Anwar आदि (2021) ने ***emotional intelligence*** एवं ***teacher effectiveness*** के संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में ***self-efficacy*** को महत्वपूर्ण कारक माना गया। शोध में यह भी स्पष्ट हुआ कि भावनात्मक रूप से संतुलित शिक्षक विद्यार्थियों के साथ बेहतर संबंध स्थापित करते हैं। "Why Do Teachers Matter?" (2023) शीर्षक मेटा-विश्लेषण में यह निष्कर्ष निकाला गया कि शिक्षक की ***professional competency*** तथा ***reflective attitude*** विद्यार्थियों की उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। अध्ययन में शिक्षक की व्यावसायिक दक्षता को शिक्षा सुधार का आधार माना गया। "Smart Teachers, Successful Students?" (2020) अध्ययन में शिक्षक की संज्ञानात्मक क्षमता एवं शिक्षक प्रभावशीलता का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में शिक्षण गुणवत्ता को विद्यार्थियों की उपलब्धि से संबंधित पाया गया। शोध के अनुसार बौद्धिक रूप से सक्षम शिक्षक विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता को बेहतर बनाते हैं। Sapsani एवं Tselios (2017) ने व्यक्तित्व विशेषताओं एवं शैक्षणिक प्रदर्शन के मध्य संबंध का अध्ययन किया। निष्कर्षों में व्यक्तित्व को उपलब्धि का महत्वपूर्ण कारक माना गया। अध्ययन के अनुसार सकारात्मक व्यक्तित्व विद्यार्थियों की अध्ययन प्रेरणा को बढ़ाता है। Zhao, Ren एवं Yang (2024) ने ***self-management***, ***self-efficacy*** तथा ***academic achievement*** पर अध्ययन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि आत्म-प्रभावकारिता विद्यार्थियों की उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है तथा शिक्षक का मार्गदर्शन विद्यार्थियों की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. विद्यालयी शिक्षकों के व्यक्तित्व का विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शिक्षण दक्षता एवं विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन के मध्य संबंध का विश्लेषण करना।
4. शिक्षक व्यक्तित्व एवं विद्यार्थियों की अध्ययन अभिरुचि तथा उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
5. विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन में शिक्षक की शिक्षण शैली, व्यवहार एवं व्यक्तित्व की भूमिका का मूल्यांकन करना।

अनुसंधान प्रश्न :

1. क्या विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है?
2. क्या शिक्षक का व्यक्तित्व विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है?
3. शिक्षण दक्षता और विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन के मध्य किस प्रकार का संबंध पाया जाता है?
4. क्या शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार एवं व्यक्तित्व विद्यार्थियों की अध्ययन अभिरुचि और प्रेरणा को बढ़ाता है?

अनुसंधान पद्धति :

प्रस्तुत शोध "विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और व्यक्तित्व का विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव" विषय

पर आधारित एक वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन है, जिसमें द्वितीयक तथ्यों (Secondary Data) का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में किसी प्रकार का प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, प्रश्नावली, साक्षात्कार अथवा क्षेत्रीय अध्ययन नहीं किया गया है। शोध हेतु आवश्यक सामग्री विभिन्न प्रकाशित पुस्तकों, शोध पत्रों, शोध प्रबंधों, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जर्नलों, शिक्षा संबंधी पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, सरकारी एवं गैर-सरकारी रिपोर्टों, इंटरनेट तथा ऑनलाइन शैक्षणिक स्रोतों से संकलित की गई। विषय से संबंधित उपलब्ध साहित्य का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण कर शिक्षण दक्षता, शिक्षक व्यक्तित्व तथा विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन के मध्य संबंध को समझने का प्रयास किया गया। संग्रहित तथ्यों का वर्गीकरण, तुलना एवं व्याख्या वर्णनात्मक विधि द्वारा की गई तथा विभिन्न विद्वानों के विचारों एवं शोध निष्कर्षों के आधार पर अध्ययन के निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए। यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होने के कारण इसके निष्कर्ष उपलब्ध साहित्य एवं दस्तावेजों तक सीमित हैं।

अध्ययन की सीमाएँ :

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल चयनित विद्यालयों के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों तक सीमित है, इसलिए इसके निष्कर्ष सभी विद्यालयों पर समान रूप से लागू नहीं किए जा सकते।
2. अध्ययन में केवल विद्यालयी शिक्षकों की **शिक्षण दक्षता** एवं **व्यक्तित्व** का विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव देखा गया है। अन्य कारकों जैसे पारिवारिक वातावरण, आर्थिक स्थिति, विद्यालयी संसाधन तथा विद्यार्थी की व्यक्तिगत रुचि को इसमें शामिल नहीं किया गया है।
3. यह अध्ययन सीमित समयावधि में किया गया है, इसलिए दीर्घकालिक प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण संभव नहीं हो पाया।
4. अध्ययन के लिए प्राप्त आंकड़े शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा दी गई जानकारी और विद्यालयी अभिलेखों पर आधारित हैं, इसलिए उत्तरों की सत्यता प्रतिभागियों की ईमानदारी पर निर्भर करती है।
5. अध्ययन में केवल निर्धारित कक्षाओं के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है, अतः अन्य कक्षाओं के विद्यार्थियों की स्थिति इससे भिन्न हो सकती है।
6. शोध में प्रयुक्त प्रश्नावली एवं मापन उपकरणों की अपनी सीमाएँ हैं, जिससे कुछ पहलुओं का पूर्ण मूल्यांकन संभव नहीं हो सका।
7. यह अध्ययन एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित है, इसलिए विभिन्न क्षेत्रों के विद्यालयों में परिणामों में अंतर हो सकता है।
8. विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन का मूल्यांकन मुख्यतः परीक्षा परिणामों के आधार पर किया गया है, जबकि उनके सर्वांगीण विकास के अन्य पक्षों को इसमें शामिल नहीं किया गया है।
9. अध्ययन के दौरान कुछ बाहरी परिस्थितियाँ, जैसे विद्यालय का वातावरण या समय-समय पर होने वाली गतिविधियाँ, परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं।
10. अध्ययन के निष्कर्ष वर्तमान परिस्थितियों पर आधारित हैं, इसलिए समय और शैक्षिक नीतियों में परिवर्तन के साथ इनमें

बदलाव संभव है।

विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता, प्रभावी शिक्षण कौशल, प्रेरणा एवं अधिगम तथा शिक्षा की गुणवत्ता में शिक्षक की भूमिका:

शिक्षक शिक्षा व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण घटक होता है। किसी भी विद्यालय की गुणवत्ता तथा विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि मुख्य रूप से शिक्षक की शिक्षण दक्षता पर निर्भर करती है। शिक्षण दक्षता से आशय शिक्षक की उस क्षमता से है जिसके माध्यम से वह विषय-वस्तु को प्रभावशाली, सरल एवं रोचक ढंग से विद्यार्थियों तक पहुंचाता है। एक दक्ष शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान नहीं करता, बल्कि विद्यार्थियों में जिज्ञासा, रचनात्मकता एवं आत्मविश्वास का विकास भी करता है।

प्रभावी शिक्षण कौशल में विषय ज्ञान, संप्रेषण क्षमता, कक्षा प्रबंधन, शिक्षण विधियों का उचित प्रयोग तथा विद्यार्थियों को प्रेरित करने की क्षमता सम्मिलित होती है। जब शिक्षक आधुनिक शिक्षण विधियों एवं तकनीकों का उपयोग करता है, तब विद्यार्थी अधिक सक्रिय रूप से अधिगम प्रक्रिया में भाग लेते हैं। प्रभावी शिक्षण विद्यार्थियों की समझ, स्मरण शक्ति एवं समस्या समाधान क्षमता को विकसित करता है।

प्रेरणा एवं अधिगम का आपस में गहरा संबंध है। प्रेरित विद्यार्थी अध्ययन के प्रति अधिक रुचि रखते हैं तथा बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को प्रोत्साहन, मार्गदर्शन एवं सकारात्मक वातावरण प्रदान करके उनकी अधिगम क्षमता को बढ़ा सकता है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों की समस्याओं को समझते हुए सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाता है, तो विद्यार्थी आत्मविश्वास के साथ सीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं।

शिक्षा की गुणवत्ता में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एक योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षक विद्यालय के शैक्षणिक वातावरण को सकारात्मक बनाता है। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में भी योगदान देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षकों की गुणवत्ता एवं प्रशिक्षण को शिक्षा सुधार का आधार माना गया है। अतः यह स्पष्ट है कि शिक्षण दक्षता एवं प्रभावी शिक्षण कौशल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शिक्षक व्यक्तित्व के आयाम, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध एवं विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन की अवधारणा:

शिक्षक का व्यक्तित्व विद्यार्थियों के जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है। शिक्षक व्यक्तित्व के अंतर्गत उसका व्यवहार, अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, सहानुभूति, नैतिक मूल्य तथा सामाजिक गुण सम्मिलित होते हैं। सकारात्मक व्यक्तित्व वाला शिक्षक विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनता है। ऐसे शिक्षक विद्यार्थियों में अनुशासन, आत्मविश्वास तथा अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

शिक्षक-विद्यार्थी संबंध शिक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण आधार है। जब शिक्षक विद्यार्थियों के साथ सहयोगात्मक एवं संवेदनशील व्यवहार करता है, तब विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित एवं प्रेरित अनुभव करते हैं। अच्छे संबंध विद्यार्थियों की अध्ययन रुचि एवं आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं। इसके विपरीत यदि शिक्षक का व्यवहार कठोर अथवा उपेक्षापूर्ण होता है, तो विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया एवं शैक्षणिक प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है। इसलिए शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य सकारात्मक संबंध शिक्षा को प्रभावशाली

बनाने के लिए आवश्यक हैं।

शैक्षणिक प्रदर्शन विद्यार्थियों की अध्ययन क्षमता, अधिगम स्तर एवं परीक्षा परिणामों को दर्शाता है। विद्यार्थियों का प्रदर्शन केवल उनकी व्यक्तिगत योग्यता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि शिक्षक की शिक्षण शैली एवं व्यक्तित्व भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिन विद्यालयों में शिक्षक प्रेरणादायक एवं सहयोगात्मक होते हैं, वहां विद्यार्थियों की उपलब्धि अपेक्षाकृत बेहतर पाई जाती है। शिक्षक का व्यवहार, मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन विद्यार्थियों को उच्च लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षक का व्यक्तित्व एवं शिक्षक-विद्यार्थी संबंध विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। सकारात्मक एवं प्रभावी शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया को अधिक सार्थक एवं सफल बनाते हैं।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं व्यक्तित्व विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। जिन शिक्षकों में विषय ज्ञान, संप्रेषण क्षमता, कक्षा प्रबंधन एवं प्रभावी शिक्षण कौशल उच्च स्तर के पाए गए, उनके विद्यार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर रहा। अध्ययन में यह भी ज्ञात हुआ कि शिक्षक का सकारात्मक, सहयोगात्मक एवं प्रेरणादायक व्यक्तित्व विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन तथा अध्ययन के प्रति रुचि विकसित करता है। शिक्षक-विद्यार्थी संबंध भी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का महत्वपूर्ण आधार पाया गया, क्योंकि संवेदनशील एवं सहयोगात्मक व्यवहार वाले शिक्षकों के विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में अधिक सक्रिय दिखाई दिए। अध्ययन से प्रेरणा एवं अधिगम के मध्य सकारात्मक संबंध भी स्पष्ट हुआ, जिसमें शिक्षक द्वारा दिए गए प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन ने विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता तथा उपलब्धि को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त प्रभावी शिक्षण विधियों, आधुनिक तकनीकों एवं उचित मूल्यांकन प्रक्रिया का उपयोग विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं व्यक्तित्व दोनों का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची :

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010). ***शैक्षिक मनोविज्ञान***। नई दिल्ली: शिप्रा पब्लिकेशन्स।
2. बेस्ट, जे. डब्ल्यू. एवं काह्न, जे. वी. (2016). ***शिक्षा में अनुसंधान***। नई दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन।
3. भाटिया, के. के. एवं सफाया, आर. एन. (2014). ***शैक्षिक मनोविज्ञान एवं निर्देशन***। नई दिल्ली: कल्याणी पब्लिशर्स।
4. चौहान, एस. एस. (2013). ***उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान***। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
5. गैरेट, एच. ई. (2008). ***मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी***। नई दिल्ली: पैरागॉन इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
6. गुप्ता, एस. पी. (2011). ***अनुसंधान पद्धति एवं सांख्यिकीय तकनीकें***। नई दिल्ली: दीप एंड दीप पब्लिकेशन्स।
7. कौल, एल. (2012). ***शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति***। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
8. मंगल, एस. के. (2015). ***उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान***। नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग।

9. मोहंती, जे. (2011). ***शिक्षक शिक्षा***। नई दिल्ली: दीप एंड दीप पब्लिकेशन्स।

10. पांडा, बी. एन. एवं मोहंती, आर. सी. (2015). ***एक सक्षम शिक्षक कैसे बनें***। नई दिल्ली: डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।

11. पासी, बी. के. (2012). ***श्रेष्ठ शिक्षक बनना***। अहमदाबाद: साहित्य मुद्रणालय।

12. शर्मा, आर. ए. (2017). ***शिक्षक शिक्षा एवं शैक्षिक तकनीकी***। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

13. सिंह, वाई. के. (2011). ***शैक्षिक मनोविज्ञान***। नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग।

14. स्किनर, सी. ई. (2009). ***शैक्षिक मनोविज्ञान***। नई दिल्ली: प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।

15. तनेजा, वी. आर. (2010). ***शैक्षिक चिंतन एवं व्यवहार***। नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स।

16. वालिया, जे. एस. (2014). ***शिक्षा की आधारशिला***। जालंधर: अहीम पॉल पब्लिशर्स।

17. क्लासेन, आर. एम. एवं त्जे, वी. एम. सी. (2014). शिक्षकों की आत्म-प्रभावकारिता, व्यक्तित्व एवं शिक्षण प्रभावशीलता। ***एजुकेशनल रिसर्च रिव्यू***, 12, 59–76।

18. किम, एल. ई., जॉर्ग, वी. एवं क्लासेन, आर. एम. (2019). शिक्षक व्यक्तित्व का प्रभाव। ***एजुकेशनल साइकोलॉजी रिव्यू***, 31(1), 163–195।

19. मा, के. (2022). शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता एवं शैक्षणिक उपलब्धि। ***फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी***, 13।

20. राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020). ***शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार***। नई दिल्ली।

21. आनंद, एस. पी. (2016). ***शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ*** नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स।

22. चतुर्वेदी, ए. के. (2018). ***आधुनिक शिक्षण विधियाँ एवं शिक्षक शिक्षा***। आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

23. दास, आर. सी. (2012). ***शिक्षा मनोविज्ञान***। नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स।

24. जैन, पी. एवं शर्मा, एम. (2019). शिक्षक व्यवहार एवं उपलब्धि। ***भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका***, 14(2), 45–52।

25. कुमार, ए. (2020). ***प्रभावी शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया***। लखनऊ: शिक्षा प्रकाशन।

26. मिश्रा, आर. एवं यादव, एस. (2021). शिक्षण दक्षता एवं उपलब्धि। ***इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च***, 9(4), 110–118।

27. पांडेय, आर. एस. (2017). ***विद्यालय संगठन एवं शिक्षक की भूमिका***। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

28. रेड्डी, वी. एवं राव, पी. (2022). शिक्षक व्यक्तित्व एवं अध्ययन अभिरुचि। ***जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज़***, 18(1), 67–74।

29. शर्मा, एम. एल. (2018). ***शिक्षा में मूल्यांकन एवं मापन***। जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

30. वर्मा, पी. (2021). ***विद्यालयी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका***। आगरा: साहित्य भवन।

31. सिंह, आर. पी. (2019). ***शिक्षक और शिक्षण कौशल***। इलाहाबाद: लोकभारती।

32. यादव, के. सी. (2020). ***प्रभावी कक्षा प्रबंधन***। नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग।

33. गुप्ता, एन. एवं सक्सेना, आर. (2022). शिक्षक व्यक्तित्व एवं विद्यार्थी प्रेरणा। ***भारतीय शिक्षा समीक्षा***, 11(2), 78–86।